P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-12* August- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय संसदीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका छत्तीसगढ़ के संदर्भ में (1950-2000)

Role of Women in Indian Parliamentary Politics in the context of Chhattisgarh (1950-2000)

Paper Submission:14/08/2021, Date of Acceptance:24/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

अनामिका शर्मा
अतिथि संकाय,
इतिहास विभाग.
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख भारतीय संसदीय राजनीति में छत्तीसगढ़ की महिलाओं की भागीदारी पर आधारित है। 1952 के प्रथम आम चुनाव से लेकर 2000 तक नये छत्तीसगढ़, राज्य के गठन के पूर्व तक छत्तीसगढ़, से 7 महिलाएं 14 बार लोकसभा में पहुंची और केवल 1 महिला ही 1967 में राज्य सभा में पहुंची। संख्या की दृष्टि से कम होने के बावजूद यहां की महिलाओं ने संसदीय कार्यवाहियों, और संसद के बाहर सामाजिक दायित्वों को निभाने में सक्रिय भूमिका निभायी है। आज जहां महिलायें जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ बराबर भागीदारी निभा रही है वहीं राजनीति में भी उनकी अधिकतम उपस्थिति हो यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

The present research article is based on the participation of women of Chhattisgarh in Indian parliamentary politics. From the first general elections in 1952 to the formation of the new Chhattisgarh state in 2000, 7 women from Chhattisgarh reached the Lok Sabha 14 times and only 1 woman reached the Rajya Sabha in 1967.Despite being meager in numbers, women here have played an active role in parliamentary proceedings, and in carrying out social responsibilities outside Parliament.Today, where women are playing equal participation with men in every sphere of life, it is very important to ensure that they have maximum presence in politics too.

मुख्य शब्द : छत्तीसगढ़, राजनीति, महिला सांसद, लोकसभा,संसदीय कार्यवाही।

Keywords:Chhattisgarh, Politics, Women MPs, Lok Sabha, Parliamentary Proceedings.

प्रस्तावना

एक समय था जब महिलाओं और राजनीति को आपस में असंगत समझा जाता था। स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं के स्तर में सुधार आया हैं जिसके परिणामस्वरूप राजनीति में उनकी भागीदारी बढ़ी है। आज महिलाएं स्वयं राज्य के विभिन्न राजनैतिक कार्यकलापों पर अधिक प्रभावशाली ढंग से और उत्साह के साथ सक्रिय भूमिका निभा रही है, उनके योगदान ने लोकतंत्र को और अधिक समृद्ध किया है।[1]

शिक्षा के प्रचार - प्रसार और बदलते समाजिक परिवेश के कारण महिलाओं में तेजी से जागरूकता आई है और शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, विज्ञान, ज्ञान, सेना से लेकर राजनीति तक सभी क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी बढ़ी है।

राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं ने बढ़ी संजीदगी से दायित्वों का निर्वाह किया है।[2] प्राचीन काल से भारतीय समाज में स्त्रियों का महत्व निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जाता है।[3] भारत में वैदिक युग में स्त्रियां उच्च शिक्षा प्राप्त करती थी। गुप्त युग तक महिलाएं शासन प्रबंध में भाग लेने लगी थी[4] मध्यकाल में रजिया सुल्तान अहिल्याबाई और आधुनिक काल में लक्ष्मीबाई, दुर्गावती आदि अनेक जीवंत उदाहरण है। भारत में लोकतंत्र की उद्घघोषणा के साथ कर्म क्षेत्र के विशाल प्रांगण में आ गई। राजनीति में स्त्रियों के चरण बड़े तीव्र गति से आगे बढ़ रहे है। महिलाएं संसद और विधानसभा में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है।[5]

शोध विधि

शोध कार्य के लिये विभिन्न पहलुओं में तथ्यों को एकत्रित कर सारणीबद्ध किया गया और तुलनात्मक शोध प्रविधि अपनायी गयी। साथ ही साथ सैम्पलिंग (Sampling)तथ्य विशलेषण (Data analysis) आदि विधियों का भी प्रयोग किया गया है। इसमें मूलतः प्राथमिक स्त्रोतों का उपयोग किया गया।

पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के लेखो, समाचार पत्रों, शोध प्रबंधों के माध्यम से द्वितीयक स्त्रोत सामग्री प्राप्त की गयी। सरकारी रिपोर्ट, रिकार्डो, सर्वेक्षणों, लोकसभा डिबेट्स के अंक से सामग्री को प्राप्त किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

यहाँ शोध पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की राजनैतिक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका का अवलोकन ऐतिहासिक दृष्टि से करना है। इसके अतिरिक्त संसद में राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सी महिलाओं ने ख्याति अर्जित की है परन्तु क्षेत्र विशेष की वे महिलाएँ जिन्होने अपने क्षेत्र के संसदीय विकास में अपना सहयोग दिया है अभी भी उपेक्षित हैं क्षेत्रीय स्तर की इन्हीं महिलाओं को राष्ट्रीय स्तर पर लाना मेरे शोध आलेख का उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

Chopra J.k. – Women in the parliament – A (Critical study of their Role)
मित्तल पब्लिकेशन द्वारा 1993 में प्रकाशित पुस्तक शोध प्रबंध के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। 487 पृष्ठो में यह पुस्तक 6 अध्धायों मे विभक्त है। इस पुस्तक में लोकसभा और राज्यसभा में महिलाओं की स्थिति और उनकी भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन और विश्लेषण किया गया है।

Desai Neera A Decade of Women's Movement in India: Collection of Papers Presented at a Seminar Organized by Research Centre for Women's Studies, S.N.D.T. University, Bombay
देसाई नीरा द्वारा रचित इस पुस्तक में देश के राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाली महिलाओं एवम् उनकी भूमिका की विस्तृत जानकारी मिलती है इस पुस्तक में छत्तीसगढ़ में स्थित "महिला जागृति संगठन" का भी उल्लेख मिलता है।

हू इज हू , लोकसभा सचिवालय नई दिल्ली
लोकसभा एवम् राज्यसभा सचिवालय द्वारा प्रति वर्ष प्रकाशित हू इज हू का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में अध्ययन किया गया है। इसमें संसद में पहुँची महिला सांसदो के बारे में प्रमाणिक जानकारी प्राप्त हुई है।

वूमेन मेम्बर ऑफ राज्यसभा , राज्यसभा सचिवालय नई दिल्ली
यह किताब राज्यसभा सचिवालय नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है इसमें 1952 से 2002 तक महिला सदस्यों और पुरूष सदस्यों के बारे में विस्तृत विवरण है साथ ही महिला राज्यसभा सदस्यो के बारे विस्तृत जानकारी मिलती है। जिससे शोध आलेख के संबंध में आवश्यक सामग्री एकत्रित की गयी है।

भूषणकेयूर , छत्तीसगढ़ में नारी
भूषण केयूर द्वारा लिखित इस किताब में छत्तीसगढ की नारियों की सामाजिक स्थिति एवम् समाज में उनकी भूमिका की विस्तृत जानकारी दी गई है।

गुप्तामदनलाल , छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन
मदनलाल गुप्ता द्वारा संपादित छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग-2 में छत्तीसगढ़ के राजनैतिक, सामाजिक सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण की परिस्थितियों का वर्णन मिलता है। राज्य निर्माण की परिस्थितियो में महिला के संसद में योगदान की भी जानकारी मिलती है। यह किताब सीधे महिलाओं से संबंधित ना होते हुये भी विषय के संबध के उत्कृष्ट जानकारी देती है।

मल्होत्रा गुरदीप-भारतीय संसद के 50 वर्ष
गुरदीप मल्होत्रा द्वारा संपादित इस पुस्तक से देश की संसदीय संस्थाओ के इतिहास और विकास

के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। महिला सशक्तिकरण में संसद और संसद में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बारे मे महत्वपूर्ण तथ्यात्मक जानकारी मिलती है।

Kumar Dr. Pankaj :Participation of women in politics, world wide experience *IOSR , Journal of Humanities and social Science (IOSR-JHSS) Volume – 22 ,pp–77-88, 12 Dec 2017*

इस शोध से पता चलता है कि दुनिया भर में महिलाओं की संसद में उपस्थिति एक सकारात्मक प्रयास है किन्तु 2017 तक में दुनिया में केवल 23 % महिला संसदीय सीटें है जो बहुत सीमित है इस शोध पत्र में बताया गया है कि महिलाएँ राजनीति में क्यो ज्यादा नही आती महिलाओं को किन राजनीतिक समस्याओं का सामना करता पड़ता है। राजनीतिक सशक्तिकरण में महिलाओ को कई, कठिनाईयो का सामना करना पड़ता है इस शोध पत्र में विश्व मे महिलाओं की राजनीतिक स्थिति के बारे में विस्तृत चर्चा है जैसे अरब देशो कुवैत मे दुनिया में सबसे कम प्रतिनिधित्व है, दूसरी तरफ स्वीडन, आइसलैण्ड और डेनमार्क जैसे देशों में स्थिति बेहतर है। महिलाओं की भागीदारी में सुधार हेतु इसमें सुझाव भी दिये है।

Rai Praveen, Women Participation in Electoral Politics in India, Silent Feminization, South Asia Research Journal, Sage Publication New Delhi 2017

इस शोध लेख में लेखक महिलाओं के राजनीतिक अध्ययन का तुलनात्मक अध्ययन करता है। वोट के रूप में भागीदारी राजनीतिक दलो के सदस्य उनकी स्थिति प्र्याप्त रूप से दिखाई देते है। संसदीय विश्लेषण से पता चलता है कि, केबिनेट मंत्रियो के अधिकांश पदो पर पुरूषो का कब्जा है राष्ट्रीय और राजकीय स्तर पर सभी राजनीतिक दलो महिलाओ की राजनीतिक भागीदारी में भेदभाव का प्रयास किया जाता है। यद्यपि महिलाओं के दृढ़ संकल्प और ताकत के कारण राजनीतिक संरचना में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता प्रतिबद्धता और चुनावी राजनीति में निर्णय लेने के प्रक्रिया में भागीदारी का स्तर धीरे-धीरे प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं

महिला आंदोलन का आंरभ 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में देखा जा सकता है।[6] उन्नीसवी शताब्दी में महिलाओं के उत्थान के लिये सिस्टर निवेदिता, ऐनी बेसेंट और मारगेट काउजीन ने महत्वपूर्ण रोल अदा किया है।[7] 1915 में महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया।[8] गांधी युग में महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़ी संख्या में भाग लिया[9] उनके नेतृत्व में महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इस तरह संघीय व्यवस्थापिका या केन्द्रीय विधानसभा को भारत में संसद कहा जाता है। महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ने लगी।[10] 1917 में भारतीय महिलाओं ने व्यवस्थापिकाओं में प्रतिनिधित्व के लिये और मताधिकार के लिए आंदोलन करना आरंभ कर दिया था। जहां अमेरिका और ब्रिटेन में महिला मताधिकार के लिए दीर्घकाल तक संघर्ष करना पड़ा वहीं भारतीय महिलाओं को कम अवधि में मताधिकार प्राप्त हो गया। ब्रिटिश सरकार ने महिला प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में उदारता का परिचय दिया। 1928 से 1937 के बीच महिला मताधिकार को व्यापक रूप प्रदान किया गया।[11]

महिलाएं और संविधान

व्यस्कों को मताधिकार देने का सिद्धांत अपनाकर और व्यस्कों को सरकार में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से भागीदारी करने का अवसर प्रदान करके भारत के संविधान में एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना की संकल्पना की गई है। संविधान के अनुच्छेद 14, अनुच्छेद 15, अनुच्छेद 15 (3), अनुच्छेद 16, अनुच्छेद 39, अनुच्छेद 51 (क) आदि में कुछ मूल अधिकार एवं स्वतंत्रता की गारन्टी दी गई है जैसे वाक, स्वातंत्रय, प्राण और देहिक स्वतंत्रता का संरक्षण जिन्हें सकारात्मक अधिकार कहा जा सकता है इसके साथ कुछ अधिकार भी प्रदान किए गए है जिनके द्वारा मूलवंश, जाति तथा लिंग के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा।[12]

भारतीय संसद में महिलाएं

भारतीय संविधान के भाग 5 के अध्याय 2 में अनुच्छेद 79 से 122 तक संसद और उसके विविध पक्षों का वर्णन है। संविधान में लिखा है "संघ के लिए एक संसद होगी जो राष्ट्रपति व दोनो सदनों से मिलकर बनेगी जिसके नाम क्रमशः राज्यसभा और लोकसभा होगा।[13]

26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने जिस संविधान को अंतिम रूप दिया और अधिनियमित किया उसके अन्तर्गत 26 जनवरी 1950 से भारत एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बन गया।[14] शासन की संसदीय लोकतंत्र प्रणाली अपनाने वाले देशों के संख्या पिछले 50 सालों में सात गुना बढ़ गयी है।[15] 1950 में भारतीय संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान में मताधिकार और चुनाव लड़ने का अधिकार बिना लिंग भेद के समान रूप् से दिया है। इस प्रकार राजनीति में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी लगातार बढ़ती रही।[16] भारतीय संसद में लोकसभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को तालिका से समझ सकते है।[17]

भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थिति

नये संविधान में स्त्री और पुरूष को समान अधिकार दिया गया है स्त्रियों को पुरूषों के समान मत देने और राजनीतिक और सार्वजनिक पदों पर चुनाव लड़ने का अधिकार दिया गया है। इस संबंध मे लिंग या अन्य किसी आधार पर एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता। यद्यपि संविधान में महिलाओं को चुनाव लड़ने का अधिकार दिया गया है फिर भी अब तक लोकसभा में बहुत कम महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला है। निम्न तालिका में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को दर्शाया गया है:-

Lok Sabha Member

Year	Total Members	No of Women Members	From M.P.	From C.G.
1952	489	24	2	1
1957	494	24	3	2
1962	494	37	4	3
1967	520	33	2	3
1972	518	28	2	1
1977	542	21	0	0
1980	542	32	2	1
1984	540	45	1	1
1989	529	28	3	0
1991	545	42	4	1
1996	545	41	4	1
1998	545	44	4	0

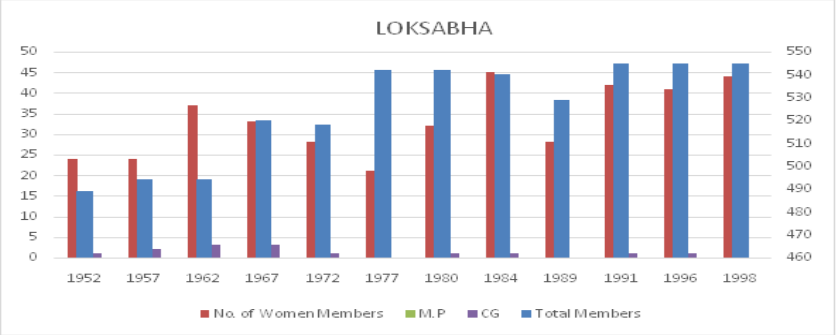

Source *– Election Commission Report*

जहाँ तक मेरा अभिमत है कि उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कोई संतोषजनक स्थिति स्पष्ट नहीं करती यद्यपि 1962, 1984, 1991 और 1996 में संसद में इनकी संख्या की बढ़ोत्तरी अवश्य हुई है, परंतु संसद में सशक्त भागीदारी का अभाव परिलक्षित होता है। संसद में महिलाओं का कम प्रतिशत होते हुये भी महिलाओं ने प्रत्येक गतिविधियों में, कार्यवाहियों में भाग लिया।

महिलाओं ने संसदीय कार्य में पुरूष सदस्यों के समान ही सहभागिता की हैं। संसद के वाद-विवाद और प्रश्नोत्तर में भाग लिया। महिला सदस्यों ने प्रश्नों और वाद-विवादों को केवल महिलाओं के विषय तक सीमित नहीं रखा वरन् समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति से संबंधित ढेर सारे प्रश्न पूछे। महिला सदस्यों ने संसदीय समितियों में कुशलतापूर्वक कार्य किया है कुछ अवसर पर इन्होंने इन समितियों के सभापतित्व का भी कार्यभार संभाला है।

भारतीय संसद में महिलाओं की स्थिति

महिला सांसदों का लोकसभा में प्रतिनिधित्व का प्रतिशत इतना कम है कि यह भारतीय लोकतंत्र के लिए एक प्रश्नवाचक चिन्ह है। लोकसभा में 500 से अधिक सदस्य हैं किन्तु आज तक किसी भी लोकसभा में 44 सदस्यों से अधिक महिलाओं को प्रतिनिधित्व नहीं मिला।

1950 में भारतीय संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान में मताधिकार और चुनाव लड़ने का अधिकार बिना लिंग भेद के स्त्री-पुरूष को समान रूप से दिया है। इस प्रकार राजनीति में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी को मान लिया गया है। 1952 के बाद से इनकी भागीदरी लगातार बढ़ती रही हैं प्रथम निर्वाचन के बाद से ही महिलाओं को मंत्रिमंडल में स्थान दिया जाता रहा है। भले ही महिला मंत्रियो, उपमंत्रियों, राज्य मंत्रियों की संख्या बहुत कम हो, परंतु यह संख्या क्रमशः बढ़ती रही है, अर्थात महिलाएँ राजनीति और सरकार संचालन में अधिकाधिक सहभागिता करती रही है।

निर्वाचन और महिलाएँ

पहली लोकसभा से तेरहवी लोकसभा निर्वाचनो में छत्तीसगढ़ क्षेत्र से निर्वाचित महिला सांसदो की संसदीय सीट और उनको प्राप्त मतो का विवरण इस प्रकार है।

प्रथम लोकसभा चुनाव

द्विसदनीय निर्वाचन क्षेत्र बिलासपुर दुर्ग रायपुर से 1953 में हुये उपचुनाव में मिनीमाता विजयी रही। आगमदास की मृत्यु के पश्चात् वहाँ हुये उपचुनाव में मिनीमाता सफल रही।

द्वितीय लोकसभा चुनाव

द्विसदनीय निर्वाचन क्षेत्र रायपुर से 1957 में रानी केसर कुमारी विजयी रहीं " अनुसूचित जनजाति (S.T.) के लिये आरक्षित सीट पर (INC) इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से 188665 वोट प्राप्त किये। बलौदाबाजार द्विसदनीय निर्वाचन क्षेत्र से अनुसूचित जाति (S.T.) सीट से (INC) पार्टी की मिनीमाता विजयी रही उन्हें 138872 वोट प्राप्त हुये।

तृतीय लोकसभा चुनाव	तीसरे लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ की 10 सीटों में मिनीमाता ने बलौदाबाजार लोकसभा सीट से इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी विजयी रही उन्हे 68063 वोट प्राप्त हुये। मिनीमाता 33006 वोट के अन्तर से विजयी रही। रायपुर लोकसभा क्षेत्र से (INC) इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से रानी केशर कुमारी विजयी रही। रानी केशर कुमारी ने 93867 वोट प्राप्त किये। 15351 वोट से केशर कुमारी विजयी रही।
चतुर्थ लोकसभा निर्वाचन	रायगढ़ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से (ST) अनुसूचित जनजाति सीट से रजनीगंधा विजयी रही। रजनीगंधा भी (INC) इण्डियन नेशनल कांग्रेस पार्टी की थी उन्होने 104980 वोट प्राप्त किये अपने प्रतिद्वदी को 29146 वोट से पराजित किया। जांजगीर लोकसभा सीट अनुसूचित जाति (SC) सीट से मिनीमाता विजयी हुयी INC पार्टी की मिनीमाता को 136589 वोट प्राप्त हुये। अपने प्रतिद्वंदी को 81240 वोट से पराजित किया।
पंचम लोकसभा	पंचम लोकसभा में मध्यप्रदेश से 37 सीटे थी जिनमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र की 10 सीटे थी। अनुसूचित जाति के लिये संरक्षित जांजगीर सीट से मिनीमाता विजयी रही मिनीमाता को 85768 वोट प्राप्त हुये अपने प्रतिद्वंदी को 39718 वोट से परास्त किया।
षष्ठम लोकसभा	छत्तीसगढ़ क्षेत्र की 11 लोकसभा सीट थी (।) इस निर्वाचन में किसी भी महिला ने प्रतिनिधित्व नहीं किया
सप्तम लोकसभा चुनाव	छत्तीसगढ़ की 11 सीटों में सप्तम लोकसभा चुनाव में रायगढ़ (SC) लोकसभा सीट से पुष्पादेवी सफल रही उन्हे 137129 वोट प्राप्त हुये अपने प्रतिद्वंदी को 81095 से पराजित किया।
अष्ठम लोकसभा	क्षेत्र की रायगढ (SC) सीट से पुष्पादेवी सफल हुयी उन्हे 216777 वोट प्राप्त हुये अपने प्रतिद्वंदी को 112779 वोट से पराजित किया।
नवम लोकसभा	11 सीटों में इस क्षेत्र की किसी भी महिला ने प्रतिनिधित्व नहीं किया।
दशम लोकसभा	क्षेत्र की रायगढ़ (SC) सीट से पुष्पादेवी सफल हुयी उन्हें 194080 वोट प्राप्त हुये अपने प्रतिद्वंदी को 55814 वोट से पराजित किया।
ग्यारहवी लोकसभा	कांकेर (SC) सीट से छबीला अरविंद नेताम विजयी रही उन्हे 219191 वोट प्राप्त हुये अपने प्रतिद्वंदी कों 24420 वोटो से पराजित किया।
बारहवीं लोकसभा (10-3-1998 से 26-04-1999)	11 संसदीय सीट में किसी से महिला उम्मीद्वार सफल नहीं रही।
तेरहवीं लोकसभा (10-10-1999 से 6-4 2004)	किसी भी महिला ने प्रतिनिधित्व नहीं किया।[18] छत्तीसगढ़ से 1952 से 1998 तक के आम चुनाव में केवल सात महिलाएँ संसद में पहुँची, जिन्हें नीचे तालिका से जाना जा सकता है:-

मिनीमाता

चुनाव वर्ष	दल	क्षेत्र	प्राप्तमत	मतों का प्रतिशत	निकटतम प्रतिद्वंदी	प्राप्त मतों का प्रतिशत
952 उपचुनाव	कांग्रेस	द्विसदनीय निर्वाचन क्षेत्र बिलासपुर	N/A	69.97	मुक्तावनदास (निर्दलीय)	30-03
1957	कांग्रेस	द्विसदनीय निर्वाचन क्षेत्र बलौदाबाजार	130872	22.01	भोगलू (अजा) (प्रजातांत्रिक समाजवादी पार्टी)	18-57
1962	कांग्रेस	सारंगगढ़ (बलौदाबाजार)	68083	52.86	इतवारी (प्रसपा)	27-23
1967	कांग्रेस	जांजगीर	136589	62.23	सुंदरलाल धनुजी (जनसंघ)	25-22
1971	कांग्रेस	जांजगीर	85678	61.37	सुंदरलाल धानुजी (जनसंघ)	N/A

केशर कुमारी

चुनाव वर्ष	छल	क्षेत्र	प्राप्तम	मतों का प्रतिशत	निकटतम प्रतिद्वंदी	प्राप्त मतों का प्रतिशत
1957	कांग्रेस	रायपुर	188665	-	-	-
1962	कांग्रेस	रायपुर	93807	39.28	प्रभाग सिंह (जनसंघ)	32.84
1963	कंग्रेस	रायपुर उपचुनाव	61935	52.58	प्रभागसिंह (जनसंघ)	37.26

स्त्रोतः संदर्भ छत्तीसगढ़ - लोकसभा चुनाव परिणाम पृष्ठ168-169, 2000 देशबंधु प्रकाशन

रजनीदेवी सिंह

1967	कांग्रेस	राजनांदगाँव	13244	56.02	प्रकाश राय (भाजपा)	18.42

रानी पद्मावती

1967	कांग्रेस	राजनांदगाँव	13244	56.02	प्रकाश राय (भाजपा)	18.42

पुष्पादेवी सिंह

1980	कांग्रेस	रायगढ़	137129	53.76	नरहरि प्रसाद राय (जनता)	31.97
1984	कांग्रेस	रायगढ़	219777	62.51	नन्दकुमार साय (भाजपा)	29.98
1991	कांग्रेस	रायगढ़	169908	53.13	नन्दकुमार साय (भाजपा)	37.85

छबिला नेताम

चुनाव वर्ष	दल	क्षेत्र	प्राप्तम	मतों का प्रतिशत	निकटतम प्रतिद्वंदी	प्राप्त मतों का प्रतिशत
1996	कांग्रेस	कांकेर	219191	39.77	सोहन पोटाई (भाजपा)	39.34

स्त्रोतः संदर्भ छत्तीसगढ़ पृष्ठ 168-169, देशबंधु प्रकाशन

छत्तीसगढ़ की महिला सांसदो की भूमिका

आजादी के बाद संसदीय व्यवस्था की शुरूआत हुई। छत्तीसगढ़, की महिलाओं ने भी उपरोक्त संसदीय व्यवस्था में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। छत्तीसगढ़, की प्रथम महिला सांसद मिनीमाता का नाम सक्रिय रूप से उत्तरदायित्व पूर्ण भूमिका के निर्वहन के संदर्भ में प्रमुखता से स्मरण किया जाता है।

क्रमांक	वर्ष	कुल सीट	निर्वाचित महिला	प्रतिशत
1.	1952	499	22	4.4%
2.	1957	500	27	5.4%
3.	1962	503	34	6.7%
4.	1967	523	31	5.9%
5.	1971	521	22	4.2%
6.	1977	544	19	3.4%
7.	1980	544	28	5.1%
8.	1984	544	44	8.1%
9.	1989	529	28	5.29%
10.	1991	509	36	7.07%
11.	1996	541	40	7.36%
12.	1998	545	44	8.07%
13.	1999	543	49	9.02%

सारंगढ़, तथा जांजगीर से जीतने वाली मिनीमाता ने न केवल महिलाओं की अपितु गरीबों दलितों एवं समस्त वर्गो के जरूरतमंद लोगों की मदद की।[19]

फाल्गुन का महिना हिन्दू सांस्कृतिक परंपरा में महत्वपूर्ण माना जाता है। होलिका दहन की रात्रि में मिनीमाता का जन्म हुआ। 1953 में बिलासपुर उपचुनाव के लिये मिनीमाता को प्रत्याशी बनाया गया और प्रचंड बहुमत से लोकसभा की सदस्या बनी।[20] संसद में जाने के बाद उन्होंने देश के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया।[21] स्वाधीन भारत की एक प्रमुख समस्या अस्पृश्यता थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वाधीनता की लड़ाई के दौर में अस्पृश्यता निवारण को अपने कार्यक्रम का

अंग बनाया था।

आजादी के बाद प्राथमिकता के आधार पर जो कार्य किए गए उनमें अस्पृश्यता निवारण कानून पारित किया जाना भी एक था। भारतीय संसद में इसके लिए बिल प्रस्तुत करने का गुरूत्तर भार मिनीमाता को सौंपा गया। छत्तीसगढ़, की पहली महिला सांसद ने यह बिल रखा और बिल के साथ उनका नाम जुड गया। छूआछूत मिटाने के लिये तथा अधिकार विहीन दलितो पिछडो के लिये मिनीमाता ने ऐसा आंदोलन खडा कर दिया कि वे न केवल छत्तीसगढ़, में वरन् देश विदेश में पूंजी जाने लगी। [22] गांवो के उत्थान एवं महिलाओं की शिक्षा हेतु संसद में कार्य किया। गुरू भावजी दास सिवा संघ की अध्यक्ष भी थी। दहेज प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई।[23]

मिनीमाता नारी शिक्षा की प्रबल समर्थक थी। धर्म परिवर्तन की विरोधी थी वे सर्वधर्म समभाव को मानती थी सब धर्मो के प्रति समान आदर था। छत्तीसगढ़, राज्य के आंदोलनकारियों में वे अग्रणी थी। छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक मंडल की वर्षो अध्यक्ष रही एवं भिलाई के छत्तीसगढ़, कल्याण मजदूर संस्था की संस्थापक अध्यक्ष भी रही।

सांसद के रूप में मिनीमाता ने हसदो बांध परियोजना को स्वीकृत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1967- 76 के मध्य यह योजना पूरी हुई तब तक मिनीमाता का निधन हो चुका था। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए म प्र सरकार ने बांध का नाम मिनीमाता बांध रखा। [24] मिनीमाता मध्यप्रदेश के सुरक्षित सीट से चुनाव लडी उन्होने सवर्णो से कहा कि वे हरिजनों से न्यायपूर्ण व्यवहार करें और उनको हिन्दू समाज में सम्मानजनक स्थान दें। [25] उन्होंने संसद मेंअपने क्षेत्र में अधिक रेल लाइनो की मांग की जिसमे यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना ना करना पडे। विभिन्न विषयों पर भी संसद में वाद विवाद में उन्होंने भाग लिया। उन्होंने महिलाओं पर उत्पीडन विधेयक (पनिशमेंट फॉर मोलेस्टेशन ऑफ विमिन बिल) का समर्थन किया। संसद में अनुदानों की मांगो विशेषकर अनुसूचित जाति से संबंधित विषयों पर चर्चा में भाग लिया। अनुसूचित जाति जनजाति आयोग की 12 वी रिपोर्ट पर संसद में विस्तार से चर्चा की और इन जातियों को लोकसभा में समुचित सरंक्षण देनें की मांग की। बिलासपुर जिले में हरिजनों पर 1968 में जो अत्याचार हुए उन सब विषयों को उन्होंने जोरदार ढंग से संसद में उठाया और सरकार से मांग की कि वह इन विषयों मे अत्याचारियों के विरूद्ध कडे, कदम उठाये।[26]

प्रथम महिला सांसद के रूप अंचल के दलितों की स्थिति सुधारने का प्रयास किया। 1 अगस्त 1971 की रात्रि को दिल्ली के निकट भीषण वायुयान दुर्घटना हुई इसमें मिनीमाता का दुखद निधन हो गया। मिनीमाता को श्रद्धांजलि स्वरूप नये छत्तीसगढ़, राज्य के रायपुर महासागर के बस स्टैंड का नाम मिनीमाता बस स्टैंड रखा गया है। छत्तीसगढ़, के विधानसभा भवन का नामकरण भी अंचल के लिए सतत् संघर्ष करने वाली मिनीमाता के नाम से किया गया है। छत्तीसगढ़, से निर्वाचित प्रथम महिला सांसद मिनीमाता का संसद में प्रवेश सर्वप्रथम इस बात को स्पष्ट करता है कि मिनीमाता एवं समाज के उस दलित एवं शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी जिनका अस्तित्व उस समय गौण था, समाज, संस्था एवं राजनीति उनकी अवहेलना करती थी, ऐसे समय में मिनीमाता ने इसका प्रतिनिधित्व संसद में करके इतिहास को एक बहुत बडी चुनौती दी। जिन अवधारणाओं को लेकर महात्मा गांधी ने दलित आंदोलन किया था , उसको संसद में संवैधानिक अस्तित्व प्रदान करने में मिनीमाता का एक प्रशंसनीय कार्य था।[27]

छत्तीसगढ़, क्षेत्र से निर्वाचित सांसद रानी पद्मावती राजनांदगांव से 1967 में निर्वाचित हुई। महारानी पद्मावती देवी इस अंचल की महान विभूतियों में से एक थी। वे खैरागढ़, राज परिवार से थी। संस्कृति के सरंक्षण के प्रति उनका गहरा लगाव था इसीलिए उन्होंने इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसे भारत का संगीत एवं ललित कलाओं का प्रथम विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उन्होने अपना ''कमल विलास पैलेस'' दान स्परूप प्रदान कर दिया था। रानी साहिबा उसकी आजीवन संस्थापक व कुलपति रही जो आज भी उनके संस्कृति के प्रति समर्पण की भावना को अक्षुण्ण बनाए हुए है।

रानी पद्मावती का जन्म प्रतापगढ, उ.प्र. में 17 जुलाई 1918 में हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने

कई कार्य किये। समान्य ज्ञानवर्धन के लिए रानी पद्मावती ने पर्दमावती पुस्तकालय की स्थापना राजभवन में ही कर रखी थी एवं निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था भी की। संस्कृत शिक्षा के लिये उन्होने "शिवेन्द्र संस्कृत पाठशाला" की स्थापना की। निर्धन रोगियों के लिये उनके ओर से पद्मावती धर्मार्थ औषधालय चलाया जाता था जहा' औषधि और चिकित्सा निशुल्क प्रदान की जाती थी। 28 राज्य का शिशु कल्याण केन्द्र व रेड क्रास केन्द्र उन्हीं की प्रेरणा से स्थापित गया था। सन् 1948 मैं राज्य विलनीकरण के पश्चात् तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व पं जवाहरलाल नेहरू तथा मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व पं रविशंकर शुक्ल ने रानी साहिबा को राजनीति मे आने के लिये प्रेरणा दी। पश्चात् मध्यप्रदेश शासन द्वारा उन्हें जनपद सभा खैरागढ़ की प्रथम अध्यक्षा मनोनीत किया गया था। वे 1967 से 1971 तक सांसद और 1956 से 1967 तक विधानसभा सदस्या रही। इसी बीच इन्होने 1956 से 1967 तक मध्यप्रदेश शासन के लोकस्वास्थ्य समाज कल्याण लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी तथा नगरीय निकाय आदि विभागो में रहते हुए प्रदेश की प्रथम महिला मंत्री होने का गौरव अजिज्ञत किया।

एथेन्स में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समाज सम्मेलन में भी रानी साहिबा भारतीय प्रतिनिधि की नेता के रूप में सम्मिलित हुई थी। 12 अप्रैल 1987 को इनका दुखद निधन हुआ। रानी पद्मावती ने संसद में रहते हुए वहाँ की कार्यवाहियों प्रश्नोत्तर एवं विभिन्न विषयों जैसे अनुदान मांग पर चर्चा की तथा वाद विवादों मं सक्रिय भाग लिया।

इस तरह उनहोने अपने क्षेत्र विकास के लिये बहुत ज्यादा प्रयत्न किये। रानी पदमावती महिला सांसद के रूप में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक गौरव खैरागढ़ विश्वविद्यलय को गौरवन्वित करती है। रानी पदमावती में मानवीय संवेदनाओं का इतना प्रबल आलोक था कि उनकी छाया में हर नागरिक अपना उत्थान एवं विकास के लिये प्रयत्नशील था।[29]

रायपुर संसदीय क्षेत्र से 1957 के दूसरे लोकसभा चुनाव और 1962 के तीसरे लोकसभा चुनाव में रानी केशनकुमारी देवी सांसद के रूप में निर्वाचित हुई। इनका जन्म 7 नवंबर 1902 को जिला बिलासपुर के पंडरिया स्टेट में हुआ इनकी राजनीति के साथ धार्मिक क्षेत्र में भी रूचि थी।[30]हरिजनो को उपर उठाने का प्रयास किया। व्रिन्दानवागढ की जमीदारी इनके पास थी। इन्होने ने भी संसद की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया। 3 मई 1962 को इनकी मृत्यु हो गई। मिनीमाता के समान रानी केशरकुमारी देवी ने हरिजनोधार में अपनी अहम भूमिका निभायी। इसके अतिरिक्त वह कुशल प्रशासिका थी क्योकि अपने पति की मृत्यु के बाद व्रिन्दानवागढ जमींदारी का प्रशासन उनके द्वारा योग्यतापूर्वक किया गया।[31] 1963 में रायपुर के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से श्यामकुमारी निर्वाचित हुई इनका जन्म 1910 में सारंगढ़ जिला रायगढ़ में हुआ। 1963 से 1967 तक ये सांसद रही। 1968 में ये राज्यसभा में निर्वाचित हुई। शिक्षा के क्षेत्र में इन्हें विशेष रूचि थी। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा निर्मित विद्या मंदिर स्कूल योजना के लिये इन्होंने 35 एकड भूमि दान में दी। जन्म से अंधों बहरे और गूंगे बच्चो के लिये एक चेरिटी संस्था बनाने के लये उदारता से दान दिया। इन्होने 1931 में अपनी नागपुर की जमीदारी को स्वेच्छा से सरकार को दान में दे दी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गई।

श्यामकुमारी भारत सेवक समाज नेशनल स्माल सेविंग ग्रुप, भगिनी मंडल रायपुर की अध्यक्ष भी थी। इनहोनें 1953 में फिगेंश्वर में एक पुस्तकालय खुलवाया जिसमें 15,000 रूपय की पुस्तक दान में दी साथ ही पुस्तकालय के लिये 60,000 रूपय नगद और दस एकड भूमि भवन के साथ दान में दी।[32] इन्होंने फिगेंश्वर के हाई स्कूल भी खुलवाया। छत्सीगढ के सांसद के रूप में श्यामकुमारी का शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया दान अपने आप में अतुलनीय है। इन्होनें शिशु नारी केन्द्र खुलवाया और इसके लिये बहुत धनराशि दी। कृषि के लिये भी भूमि दी। इस तरह वे सामाजिक कार्यो में सलंग्र थी अपनी इन्हीं रूचियों के कारण संसद में इन्होने अपने क्षेत्र के शिक्षा के विकास कृषि की उन्नति महिला उत्थान एवं बच्चों के कल्याण हेतु कार्य करवाया। चर्चा परिचर्चा में भाग लिया और क्षेत्र के विकास हेतु अपनी मांगे सरकार के समक्ष रखी।[33]

रायगढ संसदीय क्षेत्र से 1967 में निर्वाचित रजनी देवी सिंह का जन्म 31 जनवरी 1937 सारंगढ़

में हुआ। रजनी देवी सिंह की रूचि सामाजिक कार्यों में रही इन्होने कई परिवार नियोजन कार्यक्रम का आयोजन करवाया। ये महिला मंदिर और बाल मंदिर सारंगढ की सचिव भी रही। संसद में अपने रूचि के अनुरूप ही अपने क्षेत्र की उन्नति के लिये कई योजनाएँ क्रियान्वित की। सांसद के रूप् में रजनी देवी का परिवार नियोजन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य है।[34]

रायगढ़ संसदीय क्षेत्र संसदीय क्षेत्र के 1980, 1984 और 1991 में निर्वाचित पुष्पा देवी कांग्रेस की प्रत्याशी थी इन्होने भी बडी सक्रियता से क्षेत्र विकास के लिये कार्य किया। पुष्पादेवी ने संसदीय कार्यवाहियों में बडी सक्रियता से भाग लिया और लोकसभा में वाद विवाद किया। उन्होनें क्षेत्र के विकास के संबंध में सक्रियता से चर्चा की ना केवल अपने क्षेत्र अपितु देश के मुद्दों पर भी उन्होंने अपने विचार संसद में रखे जो उनकी राजनीतिक जागरूकता को दर्शाता हैं। उन्होने सोन नदी पर बाण सागर परियोजना पर चर्चा की। दल्लीराजरहा - जगदलपुर रेल लाईन का परिक्षण करवाया। रायगढ़ में वन आधारित उद्योग स्थापित करवाया। उन्होने नियम 377 के तहत चर्चा की। अनुसूचित जाति क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा केद्रो की स्थापना करवायी। इंदिरा आवास योजना का प्रचार किया। बंजारा समुदाय के लिये नई योजना बनाने हेतु संसद में चर्चा की।

Minister of Food and Supplies से अनुदान की मांग की। [35]

1996 में कांकेर संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित छबीला नेताम ने भी बडी संजीदगी से अपने दायित्वों को निभाया। महिलाओं को अधिकारों से सुसज्जित करने एवं उनको पुरूषों के बराबर सभी क्षेत्रों में शक्ति प्रदान करने के लिये लोकसभा में एक विधेयक पेश किया गया। इस विधेयक के समर्थन में कई महिला सदस्यों का नाम उल्लेखनीय है जिसमें (श्रीमती) छबीला नेताम भी शामिल थी। पुष्पा देवी और छबीला नेताम भी दलित एवं शोषित वर्गो के प्रति सहानुभूति रखती थी। और महिला आरक्षण विधेयक को पारित करने में लगनशीलता का परिचय दिया। [36] इस तरह उन्होने संस की प्रत्येक कार्यवाही में भाग लिया तथा अपने क्षेत्र व जन कल्याण के लिये योजनाएं बनाई।

छत्तीसगढ़ में निर्वाचित प्रथम महिला सांसद मिनीमाता दलित एवं शोषित वर्गो का प्रतिनिधित्व करती थी। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय सामाजिक सरंचना में परिवर्तन आ रहा था। छत्तीसगढ़ की दूसरी महिला सांसद रानी पदमावती उच्च राज्य घरानो से संबंधित होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण थी। यही कारण था कि उनके क्षेत्र की जनता न्यायालय जाने की बजाय उनके न्याय में विश्वास करती थी।

अन्य सांसदों में केशरकुमारी देवी हरिजनों का उद्धार में विश्वास रखती थी। सांसद श्यामकुमारी देवी ने सामाजिक अवधारणा में शिक्षा पर बहुत ज्यादा अपना ध्यान केन्द्रित किया उनका मानना था की शिक्षा किसी भी समाज के विकास में अत्यन्त आवश्यक है इसी श्रंखला में रजनी देवी परिवार नियोजन को अपना कार्यक्रम बनाकर एक आधुनिक भारत की परिकल्पना कर रही थी। सांसर पुष्पा देवी और श्रीमती छबीला नेताम भी अपने कार्यक्रमों को दलित और शोषित वर्गो के उत्थान से लेकर महिला आरक्षण पर अपना ध्यान केन्द्रित करती रही।

निष्कर्ष

हम कह सकते है संख्यात्मक दृष्टि से संख्या कम है पर उनकी उपलब्धियां और महिलाओं द्वारा संसद के बाहर किये गये कार्य उल्लेखनीय है क्षेत्र की महिलाएं ना केवल क्षेत्र के बल्कि राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों पर भी सजग और सक्रिय रही। जरूरत है उनको और आगे लाने के लिय एक उपयुक्त माहौल तैयार करने की ताकि वह अधिक से अधिक संख्या में राजनीति में प्रवेश कर सकें। इसका दायित्व राजनीतिक दलों परिवार समाज और स्वयं महिलाओं पर निर्भर है। महिला आरक्षण जैसे मुद्दो पर बहस करने की बजाय उन्हें आगे लाया जाये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *लोकसभा सचिवालय, भारत की संसद - सदस्य संदर्भ सेवा (ग्यारहवी लोकसभा) नई दिल्ली 1999 पृष्ठ 33-36*
2. *देशबंधु समाचार पत्र, 23 जून 2003 देशबंधु प्रेस रायपुर, छत्तीसगढ़*
3. *डॉ. अवस्थी शिवकुमार, रचना पत्रिका - मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी 1999, पृष्ठ 30-31*

आलेख - डॉ. भदौरिया भावना भारतीय राजनीति महिलाएं

4. *व्यास श्यामसुंदर, वीणा पत्रिका - श्री मध्यकालीन हिन्दी साहित्य समिति इंदौर की मासिक मूल पत्रिका वर्ष 1977, अंक 9*
5. *रचना - पूर्वोक्त*
6. *भारत की संसद पूर्वोक्त - पृष्ठ 36*
7. *R Prasad Leela Devi – Women in politics form and process, Har Anand Publication, New Delhi 1993, p. 113.*
8. *मजूमदार, अम्मू मेमन - सोशल वेलफेयर इन इंडिया महात्मा गांधीज कान्र्टीब्यूशन, लंदन, एशिया पब्लिकेशन हॉउस, 1964, पृष्ठ 160*
9. *इंडियन सोशल रिफॉर्मर - 26 जुलाई 1936, पृष्ठ 27*
10. *चोपड़ा जे के - वूमेन इन दि पार्लियामेन्ट ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ देयर रोल, मित्तल पब्लिकेशनए नई दिल्ली 1993, पृष्ठ 9*
11. *एवरेरट जे के - वूमेन सोशल चेंज इन इंडिया हेरिटेज पब्लिकेशन, इर्न दिल्ली 1979 पृष्ठ 103*
12. *भारत की संसद पूर्वोक्त - पृष्ठ 37-38*
13. *तिवारी श्रीमती ममता, शोध प्रबंध भारतीय संसद में महिला सांसदो की भूमिका का एक व्यवहारी अध्ययन, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर - 2002, पृष्ठ 286*
14. *पूर्वोक्ता पृष्ठ - 279*
15. *देशपाण्डे अंजली, संवाद- समाचार समीक्षा फीचर, आलेख - दुनिया की संसदो में महिलाएं आधी आबादी की हिस्सेदारी से रहित लोकतंत्र, शुक्रवार 14 फरवारी 1997, खण्ड 25, अंक 36*
16. *विधायिनी पत्रिका, म.प्र. विधानसभा सचिवालय भोपाल - वर्ष 4, अंक 4, 1987, पृष्ठ 96*
17. *हू इज हू – X-XII लोकसभा - प्रकाशन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली*
18. *General Election Commision Report, Years 1952, 1957, 1962, 1967, 1972, 1977, 1980, 1984, 1989, 1991, 1996, 1998, 1989, Election Commision of India.*
19. *कश्यप सुभाष, संसदीय प्रक्रिया द राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 1999 पृष्ठ 2*
20. *केयूरभूषण- (ममतामयी माँ मिनीमाता) छत्तीसगढ़ में नारी रत्न, 2000 पृष्ठ 12*
21. *वेहार रामकुमार - छत्तीसगढ़, की संस्कृति और विभूतिया प्रकाशन छत्तीसगढ़ शोध संस्थान सुंदर नगर रायपुर, 2003 पृष्ठ 26*
22. *वर्मा परदेशी राम - महतारी मिनीमाता, सन 1998, पृष्ठ 78*
23. *हू इज हू - 1957 - पृष्ठ 257 - 258 हू इज हू कृ 1962 - पृष्ठ 306 - 307*
24. *वर्मा परदेशी राम - महतारी मिनीमाता पृष्ठ 9*
25. *Loksabha debates Vol.- 4, 22-4-1955- Col. 6616 - 18 , Vol. – 3, 22- 7- 1957 – Col. 6975-79*
26. *Loksabha debates – Vol. – 10, 20-12-1957 – Col. 6975-79. 21-12-1957 – Col. 6975-79 & 7042-49 21-12-1958 – Col. 2072-75 Vol. 53,29-03-1961 – Col. 7982-86 Vol. 37 14-12-1964 – Col. 4741-47 Vol. 40, 25-03-1965 – Col. 5915-25 vol. 13, 06-03-1968 – Col. 369-78*
27. *वेहार रामकुमार दृ छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवम विभुतिया पृष्ठ 57*
28. *छत्तीसगढ़ के नारी रत्न पृष्ठ 9*
29. *वेहार रामकुमार छत्तीसगढ़ की संस्कृति और विभूतिया पृष्ठ 57*
30. *जैन सी के-वुमेन पार्लियामेन्ट इन इंडिया पब्लिकेशन नई दिल्ली 1993 पृष्ठ 633*
31. *हू इज हू - पुर्वोक्त*
32. *Loksabha debates 1962 , Vol. : XLVIII p. 4856-4858*
33. *Loksabha debates 1965, Vol. : XLIX p. 6326*
34. *वुमेन पार्लियामेन्ट इन इंडिया पुर्वोक्त - पृष्ठ 798*
35. *Loksabha debates 08 Aug 1985, Vol : VIII p. 188 – 189 Loksabha debates 08 Aug 1985 , Vol. : X p. 277 Loksabha debates 19 Nov 1985, Vol. : VII p. 101-102 Lok Sabha 19 Nov 1985 , Vol. : X p. 330 Loksabha debates 07 May 1986 , Vol. : XVII p. 250 Loksabha debates 19 Mar 1986 , Vol : XVI p. 103-104 Loksabha debates 16 Apr 1986 , Vol : XVI p. 218-222 Loksabha debates 17 Apr 1986 , Vol : XVI p. 262-265*
36. *तिवारी श्रीमति ममता - शोध प्रबंध पूर्वोक्त पृष्ठ 186*
37. *Rai Praveen, Women Participation in Electoral Politics in India, Silent Feminization, South Asia Research Journal, Sage Publication New Delhi 2017*
38. *Kumar Dr. Pankaj :Participation of women in politics, world wide experience IOSR, Journal of Humanities and social Science (IOSR-JHSS) Volume – 22 ,pp–77-88, 12 Dec 2017*